महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय

जंगल धूसड़- गोरखपुर

फोन नं0 : 0551–6827552, 2105416

मो. : 9794299451

Website: www.mpm.edu.in

E-mail : mpmpg5@gmail.com

स्थापित २००५ ई.

पत्रांक : ....

दिनांक : 26.08.2016

प्रकाशनार्थ

महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धू~~सड़, गोरख~~पुर में आज से प्रारम्भ **सप्त दिवसीय राष्ट्रसन्त महन्त अवेद्यनाथ स्मृति व्याख्यान माला** के उद्घाटन समारोह के अध्यक्ष पूर्व **कुलपति प्रो. रामअचल सिंह** ने कहा कि महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज का विराट व्यक्तित्व एक ऐसे मनीषी का भव्य स्वरूप है जिसमें 'धर्म' का साक्षात् दर्शन होता है। उन्होंने भारतीय राजनीति को एक नयी दिशा दी; कथित धर्मनिरपेक्ष राजनीति की दूषित अवधारणा को नकारते हुए धर्मनिष्ठ राजनीति की प्रतिष्ठा की। भारतीय समाज में 'जातिवाद' की विषबेलि को समूल उखाड़ फेंका और बिना किसी की परवाह के सामाजिक समरसता का मूलमंत्र देकर भारतीय धर्म गुरुओं का नेतृत्व किया तथा छुआछूत जैसी कुरीतियों के विरुद्ध जन–जागरण अभियान छेड़कर हिन्दू समाज को एकता का पाठ पढ़ाया। शिक्षा और स्वास्थ्य को जन–सेवा का आधार बनाकर 'परहित सरिस धर्म नहिं भाई' उक्ति को चरितार्थ किया। श्रीराम जन्मभूमि मुक्ति आन्दोलन के बहाने पंथों के नाम पर बँटे धर्मगुरुओं को एक मंच पर लाकर राष्ट्रीय स्वाभिमान तथा सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का शंखनाद किया। महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज अपने युग के एक ऐसे महानायक हैं जिन्होंने राजनीतिक, धार्मिक, सामाजिक, शैक्षिक तथा सांस्कृतिक क्षेत्रों में एक साथ पुनर्जागरण का उद्घोष किया। भारत के बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध के तथा इक्कीसवीं सदी के प्रारम्भिक दशकों में वे जाज्वल्यमान नक्षत्र हैं। वे ऐसे महायोगी हैं जिनका अन्तःकरण समता में स्थित है, जिन्होंने इस जीवित अवस्था में ही सबको जीत लिया। उनके स्मृति में आयोजित यह सप्तदिवसीय व्याख्यान माला भारत के महान सांस्कृतिक परम्परा को नई पीढ़ी तक पहुँचाने में सफल होगी। क्योकि कोई भी राष्ट्र अपने शिक्षकों एवं शिक्षा की गुणवक्ता पर ही महान बनता है।

उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि डॉ0 हरि सिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, सागर, मध्यप्रदेश के दर्शनशास्त्र विभाग के अध्यक्ष प्रो0 अम्बिकादत्त शर्मा ने **''सांस्कृतिक आक्रमण : प्रतिरोध की दिशाएँ''** विषय पर बोलते हुए कहा कि वर्तमान युग भारतीय संस्कृति पर नई चुनौतियों के लिए महत्वपूर्ण हो चुका है। आज भारतीय संस्कृति के समक्ष बाहर से नही अपितु अन्दर से चुनौतियां पैदा हुई है। जैसे अभी कुछ दिन पहले असहिष्णुता का मुद्दा उठा कर पूरे देश की चेतना को विषाक्त करने का प्रयत्न हुआ। यद्यपि यह सांस्कृतिक प्रश्न था तथापि इसे राजनीतिक दृष्टि से उठाया गया। इसके प्रतिरोध के स्वर भी उभरे। भारतीय संस्कृति और जीवन मूल्य पर चुनौतियां हर युग में अन्दर व बाहर दोनों से आयी है और इन चुनौतियों का प्रतिरोध एवं समाधान भी भारतीय समाज से ही निकला है। चार्वाक, नीलवर्ण, विदेशी आक्रान्ता, ईसाई मिशनरी, इस्लाम एवं प्रोटेस्टेन्ट ईसाई एवं आधुनिकता के ताल–मेल से जनमी आधुनिक पैसाचिक सभ्यता एवं मार्क्सवादी विचारधारा के रूप में भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति पर संकट आते रहे है। सांस्कृतिक स्वायत्ता प्रभावित होती रही हैं और इसके समाधान खोजे जाते रहे है। आधुनिक समय में उत्पन्न चुनौतियों से निपटने के लिए आवश्यक है कि हम भारतीय संस्कृति पर सांस्कृतिक आक्रमणों का इतिहास और उससे सुरक्षा को मंत्र का अध्ययन करें। सांस्कृतिक आक्रमणों से निपटने के दो तरीके हैं एक शठे शाठ्यं समाचरेत तथा दूसरा सर्व समावेशी हिन्दू चेतना। देश में यह बहस का विषय हैं। भारत ने इन दोनो तरीकों का उपयोग किया है। वर्तमान युग में हम किस प्रतिरोध के तरीके का उपयोग करें यह निर्णय भारतीय समाज को करना होगा।

इस अवसर पर डॉ0 सलील कुमार पाण्डेय द्वारा सम्पादित सामाजिक मानविकी शोध पत्रिका **''चेतनता''** का विमोचन हुआ। प्रस्ताविकी प्राचार्य डॉ0 प्रदीप कुमार राव ने रखी। संचालन श्री सुबोध कुमार मिश्र ने किया। सरस्वती वन्दना, स्वागत गीत, आकान्क्षा सिंह, वर्षा जायसवाल, रिदिमा त्रिपाठी, रमा सिंह, दीपिका मिश्रा द्वारा प्रस्तुत किया गया। वन्देमातरम् के साथ उद्घाटन समारोह पूर्ण हुआ। इस अवसर पर डॉ0 रवि कुमार, नरसिंह बहादुर चन्द, डॉ0 अभय कुमार श्रीवास्तव, डॉ0 आरती सिंह, डॉ0 अपर्णा मिश्रा, डॉ0 मनीता सिंह, डॉ0 शक्ति सिंह, डॉ0 कविता मध्यान, डॉ0 प्रियंका मिश्रा, डॉ0 प्रवीन्द्र कुमार, डॉ0 मंजेश्वर, डॉ0 महेन्द्र प्रताप सिंह सहित महानगर के बुद्धिजीवियों सहित महाविद्यालय के सभी छात्र/छात्राएं एवं शिक्षक उपस्थित रहें।

(डॉ. प्रकाश प्रियदर्शी)
सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी